समकालीन साहित्य

विविध परिप्रेक्ष्य

प्रो. संजय एल. मादार

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक व लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलैक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरूत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

© सुरक्षित

I.S.B.N. 978-81-7965-280-0

प्रथम संस्करण : 2016

मूल्य : ₹900/-

प्रकाशक :
टी.एस. बिष्ट
तक्षशिला प्रकाशन
98-ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 011-43528469, 23258802
टेलीफैक्स : 011-23258802
ई-मेल : info@taxshilabooks.in, taxshilabooks@gmail.com

मुद्रक :
बालाजी ऑफसेट
दिल्ली-110032

विषय-सूची

संपादकीय 7

कविता खंड

1. समकालीन कविता की संवादधर्मिता 17
   डॉ. विजय महादेव गाड़े
2. मूल्य संकट और समकालीन कविता 33
   डॉ. गीता के.सी.
3. इसलिए कि मेरी नाभि में कस्तूरी थीः अरुण कमल 40
   ऋषभदेव शर्मा
4. समकालीन कवि 'धूमिल' और सामाजिक यथार्थ 45
   डॉ. इल्यास आर. जेठवा
5. "नए इलाके में" से होकर 53
   सी.जे. प्रसन्न कुमारी
6. हिंदी की समकालीन कविता में इकोफेमिनिसम 63
   प्रो. के. वनजा
7. समकालीन साहित्य और चुनौतियाँ-नारी स्वावलंबन का विशेष संदर्भ 72
   डॉ. वी. जगन्नाथ रेड्डी
8. समकालीन हिंदी काव्य का पुनर्मूल्यांकन 79
   डॉ. मोहन एल. चव्हाण
9. वैश्विकता के संदर्भ में समकालीन हिंदी कविता 84
   डॉ. रमेश कुमार

10. समकालीन कविता में युगीन संदर्भ 94
डॉ. प्रियंका सिंह
11. समकालीन हिंदी कविता में स्त्री विमर्श 103
डॉ. राधामणि सी.
12. कबीर की सांस्कृतिक समझ और समकालीन हिंदी कविता 110
डॉ. उमा टी.एम.
13. समकालीन हिंदी कविता की पृष्ठभूमि 122
डॉ. के. श्यामसुन्दर
14. निराला के काव्य का राजनीतिक संदर्भ 125
कौशल्या वरदराजन
15. कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का काव्य संसारः एक झलक 134
कौशल्या वरदराजन
16. मुक्तिबोध के 'अंधेरे में' का शिल्पगत वैशिष्ट्य 142
मृत्युंजय सिंह
17. समकालीन स्त्री कविता में अभिव्यक्त नारी की चुनौतियाँ 155
सुरभी सुरेंद्रन
18. समकालीन कविता का जनचरित्र 160
डॉ. विष्णु राय
19. समकालीन कविता की संवेदना 167
डॉ. उषरा पी.एस.
20. स्त्री के बदलते रूप और समकालीन कविता 178
श्रीविद्या एन.टी.
21. समकालीन हिंदी कविता में अभिव्यक्त राजनैतिक चेतना 182
डॉ. केशव क्षीरसागर
22. केदारनाथ अग्रवाल की कविता में ग्राम जीवन 189
डॉ. सी. जयशंकर बाबू
23. कुँवर नारायण की कविता में जीवन संघर्ष एवं मानवीय मूल्य 197
डॉ. राजेंद्र पोवार
24. भूमंण्डलीकरण और आज की हिंदी कविता 203
डॉ. वर्षा निवृत्ति सहदेव

25. समकालीन हिंदी कविता का स्त्रीवादी स्वर और अनामिका 209
सितारे हिंद
26. समकालीन हिंदी कविता 216
प्रसीना षिजो
27. समकालीन हिंदी कविता और प्रमुखवाद 222
टी. सुनीता
28. समकालीन हिंदी कविताः शिल्प वैशिष्ट्य 225
निर्भय सिंह
29. समकालीन हिंदी कविता में अभिव्यक्त राजनीतिक चेतना 231
सौरभ कुमार
30. समीक्षा : 'सिमटती सुबह'- सरिता गुप्ता 239
ब्रज भूषण

गद्य खंड

1. समकालीन हिंदी साहित्य के उभरते परिदृश्य में नारी संवेदना 245
डॉ. अमित शुक्ल
2. समकालीन स्त्री लेखन में निरूपित पुरूष छवि 252
डॉ. सरोज कुमारी
3. सांप्रदायिकता का बदलता चेहरा और समकालीन उपन्यास 265
डॉ. पी. रवि
4. स्त्री-मुक्ति आंदोलन और महिला लेखिकाओं के उपन्यास 272
डॉ. एम. शाहुल हमीद
5. समकालीन महिला उपन्यासकार सृजन के विभिन्न पड़ाव 282
डॉ. लेखा एम.
6. समकालीन हिंदी उपन्यासों में भारतीय जनजातियों
का विस्थापन 294
डॉ. रूबी एलसा जेकव
7. समकालीन हिंदी साहित्य 'खुशकिस्मत'- समकालीन कहानियों
में संवेदना 312
प्रा. डॉ. कुसुम राणा

8. समकालीन कथा साहित्य में अभिव्यक्त संवेदनशून्यता 318
डॉ. नागरत्ना एन. राव
9. समकालीन नाटकों में आधुनिक भावबोध 323
डॉ. संजय एल. मादार
10. समकालीन हिंदी साहित्य-कहानी के संदर्भ में हिंदी कहानी का समकालीन परिदृश्य 352
डॉ. वासुदेवन 'शेष'
11. समकालीन नारी विमर्श 360
डॉ. मेरी वर्गीस
12. चित्रा मुद्गल की कहानी – समकालीन संदर्भ में 365
डॉ. सुषान अलेक्स
13. समकालीन साहित्यिक परिदृश्य में हिंदी का प्रवासी साहित्य 373
डॉ. राहुल मिश्र
14. समकालीन हिंदी उपन्यास 381
राकेश वलवी
15. उत्तर औपनिवेशिक दौर में समकालीन हिंदी साहित्य की संसक्ति 386
सौम्या थॉमस
16. संजीव के कहानियों में समकालीनता का बोध 390
तानाबाई एस. पाटील

गज़ल खंड

1. समकालीन हिंदी गज़ल : राजनीतिक आयाम 399
प्रो. (डॉ). जयराम श्री सूर्यवंशी
2. समकालीन हिंदी गज़ल की सांस्कृतिक चेतना 411
डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर
3. अप्सरा, संन्यास और गज़ल 421
डॉ. शिव प्रसाद शुक्ल
4. चंद्रसेन 'विराट' एवं सुरेश भट्ट की गज़लों में व्यक्त सामाजिक बोध 429
प्रो. डॉ. मुकेश राजे गायकवाड 'मुकेश'

2

मूल्य संकट और समकालीन कविता

डॉ. गीता के.सी.

सामान्यतः साहित्य में सांस्कृतिक परिवेश के अंतर्गत मूल्यों पर विचार किया जाता है। साहित्यिक क्षेत्र में 'मूल्य' शब्द का प्रयोग व्यापक और विशद अर्थ में होता है। इसके तहत पारंपरिक मूल्य, जीवन मूल्य, सामाजिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य, वैज्ञानिक मूल्य, दार्शनिक मूल्य आदि आते हैं। जीवन एक सतत गतिशील प्रक्रिया है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण समाज की परिधि में रहकर जीवन का निर्वाह करता है। जीवन मूल्यों का निर्माण व्यक्ति और समाज दोनों की हित भावना से सामूहिक अनुभूति और निर्णय के आधार पर संभव होता है। साहित्यकार जीवन मूल्यों को मानवीय जीवन की व्यवहारिकता में प्रस्तुत करता है और उसे सैद्धांतिक घेरे से निकालता है। यों साहित्य जीवन मूल्यों को जनोन्मुखी बनाता है। साहित्य का महत्व इसमें निहित है कि वह संचित जीवन मूल्यों की रक्षा करता है। मानव जीवन को सुखमय, सौन्दर्यमय और प्रीतिकर बनाने में जीवन मूल्य का स्थान कम नहीं है। जीवन मूल्यों के अंतर्गत मर्यादा, आस्था, विश्वास, कर्तव्य, कर्म, भ्रातृत्व, अनुराग, राष्ट्र के प्रति निष्ठा, भक्ति, श्रद्धाभाव, त्याग, ममता, तपस्या, सहानुभूति, सहिष्णुता आदि को लिया जाता है। इन जीवन मूल्यों के ह्रास के परिणामस्वरूप आतंकवाद का जन्म होता है। आजकल जीवन मूल्य बिखरता जा रहा है। समाज परिवर्तनशील है। आजकल तीव्रगति से यह परिवर्तन भी हो रहा है। वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ मूल्य क्षरण भी हो रहा है। मूल्यों में होने वाला यह परिवर्तन और ह्रास दो कारणों से संभव होता है-पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव तथा भूमंण्डलीकरण। समकालीन साहित्यकारों ने रचनाओं में मूल्य क्षरण या मूल्य संकट को विषय बनाया है। फलतः समकालीन कविता में मूल्यहीनता की अभिव्यक्ति

3

सांप्रदायिकता का बदलता चेहरा और समकालीन उपन्यास

डॉ. पी. रवि

"अब दुनियाभर में लोगों की सहनशीलता कम से कमतर होती जा रही है और लोग धीरे-धीरे आने वाले समय में अपने ही जैसे कपड़े पहनने वाले और अपने जैसी भाषा बोलने वाले, अपने ही रंग, जाति और धर्म के लोगों के मोहल्लों में रहना पसंद करेंगे।" 'एक ब्रेक के बाद'- पृ.-84, अलका सरावगी।

बाजारी दुनिया में आज हम बाहरी तौर पर सभ्य, सेकुलर एवं सजग नागरिक का पोशाक पहनते हैं, लेकिन भीतरी तौर पर कहीं भी सहमना की भावना नहीं है। मानवता के नाम पर आज कहीं भी मानव एकत्रित नहीं होता है। भाषा, धर्म, जाति इत्यादि के खानों में वह घुसने लगा है और इसी के आधार पर समाज एवं राष्ट्र की कल्पना करने लगा है। इन सबकी नींव में आतंकवाद की ओर बढ़ती सांप्रदायिकता है।

सांप्रदायिकता का बदलाव कभी भी सकारात्मक नहीं रहा, वह जन्म से ही मानव विरोधी रही है और आज सबसे खतरनाक, भीषण एवं नृशंस रूप ग्रहण कर रही है। कहने की जरूरत ही नहीं है कि आज जीवन के हर क्षेत्र– शिक्षा, राजनीति, मीडिया इत्यादि– में सांप्रदायिक शक्तियों का सान्निध्य बहुत सशक्त है। प्राथमिक शिक्षा आज धर्मों एवं जातियों के हाथ में है। स्कूल की नैतिक शिक्षा (moral science) तथा उससे संबंधित सभी कार्य धर्म व जाति के आचारानुष्ठानों के आधार पर चलते हैं और बच्चों के बीच की मैत्री भी-मंदिर वाले, मस्जिद वाले, गिरिजाघर वाले- इसी के समीकरण पर चलती है। यहां तक कि विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचिव

प्रो. संजय एल. मादार

एम.ए., बी.एड्, एम.फिल,
पीएच-डी., नेट, सेट

www.taxshilabooks.in

तक्षशिला

तक्षशिला प्रकाशन
98-ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली 110002
दूरभाष: 011-43528469, फैक्स: 011-23258802
e-mail: info@taxshilabooks.in
taxshilabooks@gmail.com

ISBN - 978-81-7965-280-0